

Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 13 अक्टूबर, 2021

वशिव गठिया रोग दविस

गठिया रोग और इसके प्रभाव के वषिय में जागरूकता फैलाने के लिये प्रतविर्ष 12 अक्टूबर को 'वशिव गठिया रोग दविस' (WLD) का आयोजन कया जाता है। गठिया रोग कोई एक अकेली बीमारी नहीं है, बल्कि जोड़ों से संबंधित सौ से अधिक रोगों के लिये एक व्यापक शब्द है। यह जोड़ों या उसके आसपास सूजन पैदा कर सकता है, जिसके परिणामस्वरूप दर्द, जकड़न और कभी-कभी चलने में कठिनाई होती है। 'वशिव गठिया दविस' का आयोजन पहली बार वर्ष 1996 में कया गया था। वर्ष 2021 के लिये इस दविस की थीम है- 'डॉट डलि, कनेक्ट टुडे: टाइम2वरक'। 'यूरोपयिन एलायंस ऑफ एसोसिएशंस फॉर रुमेटोलॉजी' के आँकड़ों की मानें तो गठिया रोग से पीड़ित अनुमानतः सौ मिलियन लोग ऐसे हैं, जो बनिा कसिी नदिान के इसके लक्षणों से नपिटने की कोशशि कर रहे हैं और अक्सर इसे अनदेखा कर दया जाता है। गठिया रोग कई प्रकार के होते हैं, जसिमें 'ऑस्टयिआरथराइटसि' (OA) और 'रूमेटोइड गठया' (RA) प्रमुख हैं। दुनया की आबादी का एक बड़ा हसिसा गठया रोग से प्रभावति है, जो उनके जीवन की गुणवत्ता एवं समाज में भागीदारी को प्रभावति करता है।

'करुपपुर कलमकारी पेंटगि' और 'कल्लाकरुचि लकड़ी की नक्काशी'

हाल ही में तमलिनाडु की 'करुपपुर कलमकारी पेंटगि' और 'कल्लाकरुचि लकड़ी की नक्काशी' को भौगोलिक संकेत (GI) टैग प्रदान कया गया है। गौरतलब है कि 'कलमकारी पेंटगि' शुद्ध सूती कपड़े पर की जाती है, जो मुख्य रूप से मंदरिों की छतरी के कवर, बेलनाकार हैंगगि और रथ कवर के लिये उपयोग होती है। वही 'कल्लाकरुचि लकड़ी की नक्काशी' 'लकड़ी की नक्काशी' का एक अनूठा रूप है, जसिमें शलिपकारों द्वारा पारंपरिक शैलियों के अलंकरण और डिजाइनों का उपयोग कया जाता है। दस्तावेज़ी साक्ष्यों से पता चलता है कि 'कलमकारी पेंटगि' 17वीं शताब्दी की शुरुआत में 'नायक शासकों' के संरक्षण में विकसति हुई, जबकि एक कला के रूप में 'कल्लाकरुचि लकड़ी की नक्काशी' का विकास तब हुआ, जब मदुरै प्राचीन काल में वभिन्नि राजशाही शासनों के तहत एक महत्त्वपूर्ण शहर था। समय के साथ लकड़ी पर नक्काशी करने वाले शलिपकार दूसरे शहरों और स्थानों पर चले गए, जहाँ उन्होंने अपनी एक वशिषिट शैली विकसति की।

जर्मनी में वशिव की पहली स्वचालति ट्रेन

जर्मनी ने हाल ही में 'हैम्बर्ग' शहर में दुनया की पहली स्वचालति, चालक रहति ट्रेन का अनावरण कया है, जो कपारंपरिक ट्रेनों की तुलना में समय की अधिक पाबंद और ऊर्जा कुशल बताई जा रही है। ऐसी चार ट्रेनें शहर के उत्तरी हसिसे के एस-बान रैपडि शहरी रेल नेटवर्क में शामिल होंगी और मौजूदा रेल बुनयािदी अवसंरचना का उपयोग करते हुए दसिंबर माह से संचालन शुरू करेंगी। गौरतलब है कि पेरसि जैसे अन्य शहरों में चालक रहति मेट्रो मौजूद हैं, जबकि हवाई अड्डों में भी प्रायः स्वचालति मोनोरेल ही चलती है, कति इन सभी का संचालन वशिष एकल पटरियों पर कया जाता है, जबकि 'हैम्बर्ग' ट्रेन अन्य नयिमति ट्रेनों के साथ पटरियों को साझा करेगी। जर्मनी में ट्रेन संचालन नेटवर्क को नयित्तरति करने वाली कंपनी ने कहा कि यदयपि ट्रेन को डिजिटल तकनीक के माध्यम से पूर्णतः स्वचालति रूप से नयित्तरति कया जाएगा, लेकिन एक ड्राइवर यात्रा की नगिरानी के लिये वहाँ मौजूद रहेगा।

अकासा एयरलाइन

स्टॉक मार्केट नविशक राकेश झुनझुनवाला द्वारा समर्थति 'अकासा एयरलाइन' को नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा 'अनापत्तिप्रमाण पत्र' (NOC) प्रदान कया गया है। यह एयरलाइन, जो किकिम लागत वाहक के रूप में अपनी सेवाएँ देने की योजना बना रही है, अगले वर्ष तक संचालन शुरू कर सकती है। यह एयरलाइन आगामी चार वर्षों में लगभग 70 विमानों के संचालन की योजना बना रही है। कंपनी द्वारा अपने संचालन में 'अल्ट्रा लो कॉस्ट कैरियर्स' (ULCC) मॉडल का उपयोग कया जाएगा। इस मॉडल के तहत 'अकासा एयरलाइन' 'इंडगि' और 'स्पाइसजेट' जैसी वशिषिट बजट एयरलाइनों की तुलना में परिचालन लागत को भी कम रखने पर ध्यान केंद्रति करेगी। वर्ष 2019 में 'जेट एयरवेज़' के बंद होने और 'एयर इंडया' के वनिविश के बाद से एयरलाइन उद्योग की स्थिति काफी कमज़ोर बनी हुई है, ऐसे में 'अकासा एयरलाइन' की उपस्थिति भारतीय एयरलाइन उद्योग को मज़बूती प्रदान कर सकती है।